।। अथ श्रीसाईसच्चरित।। ।। अध्याय ४६ ।।

बाबा की गया यात्रा-बकरों की पूर्व जन्मकथा

इस अध्याय में शामा की काशी, प्रयाग व गया की यात्रा और बाबा किस प्रकार वहाँ इनके पूर्व ही (चित्र के रुप में) पहुँच गए तथा दो बकरों के गत जन्मों के इतिहास आदि का वर्णन किया गया है।

प्रस्तावना

हे साई! आपके श्रीचरण धन्य हैं और उनका स्मरण कितना सुखदायी है! आपके भवभयविनाशक स्वरुप का दर्शन भी धन्य है, जिसके फलस्वरुप कर्मबन्धन छिन्नभिन्न हो जाते हैं। यद्यपि अब हमें आपके सगुण स्वरुप का दर्शन नहीं हो सकता, फिर भी यदि भक्तगण आपके श्रीचरणों में श्रद्धा रखें तो आप उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव दे दिया करते हैं। आप एक अज्ञात आकर्षण शक्ति द्वारा निकटस्थ या दूरस्थ भक्तों को अपने समीप खींचकर उन्हें एक दयालु माता की नाईं हृदय लगाते हैं। हे साई! भक्त नहीं जानते कि आपका निवास कहाँ है, परन्तु आप इस कुशलता से उन्हें प्रेरित करते हैं, जिसके परिणामस्वरुप भासित होने लगता है कि आपका अभय हस्त उनके सिर पर है और यह आपकी ही कृपा-दृष्टि का परिणाम है कि उन्हें अज्ञात सहायता सदैव प्राप्त होती रहती है। अहंकार वे वशीभूत होकर उच्च कोटि के विद्वान् और चतुर पुरुष भी इस भवसागर की दलदल में फँस जाते हैँ। परन्तु हे साई! आप केवल अपनी शक्ति से असहाय और सुहृदय भक्तों को इस दलदल से उबारकर उनकी रक्षा किया करते हैं। पर्दे की ओट में छिपे रहकर आप ही तो सब न्याय कर रहे हैं। फिर भी आप ऐसा अभिनय करते हैं, जैसे उनसे आपका कोई सम्बन्ध ही न हो। कोई भी आप की संपूर्ण जीवन गाथा न जान सका। इसलिए यही श्रेयस्कर है कि हम अनन्य भाव से आपके श्रीचरणों की शरण में आ जाएँ और अपने पापों से मुक्त होने के लिए आपका ही नामस्मरण करते रहें। आप अपने निष्काम भक्तों की समस्त इच्छाएँ पूर्ण कर उन्हें परमानंद की प्राप्ति करा दिया करते हैं। केवल आपके मधुर नाम का उच्चारण ही भक्तों के लिए अत्यन्त सुगम पथ है। इस साधन से उनमें राजसिक और तामसिक गुणों का ऱ्हास होकर सात्विक और धार्मिक गुणों का विकास होगा। इसके साथ ही साथ उन्हें क्रमशः विवेक, वैराग्य और ज्ञान की भी प्राप्ति हो जाएगी। तब उन्हें आत्मस्थित होकर गुरु से भी अभिन्नता प्राप्त होगी और इसका ही दूसरा अर्थ है गुरु के प्रति अनन्य भाव से शरणागत होना। इसका निश्चित प्रमाण केवल यही है कि तब हमारा मन स्थिर और शांत हो जाता है। इस शरणागति, भक्ति और ज्ञान की महत्ता अद्वितीय है, क्योंकि इनके साथ ही शांति, वैराग्य, कीर्त्ति, मोक्ष इत्यादि की भी प्राप्ति सहज ही हो जाती है।

यदि बाबा अपने भक्तों पर अनुग्रह करते हैं तो वे सदैव ही उनके समीप रहते हैं, चाहे भक्त कहीं भी क्यों न चला जाए, परन्तु वे तो किसी न किसी रुप में पहले ही वहाँ पहुँच जाते है। यह निम्नलिखित कथा से स्पष्ट है।

गया यात्रा

बाबा से परिचय होने के कुछ काल पश्चात् ही काकासाहेब दीक्षित ने अपने ज्येष्ठ पुत्र बापू का नागपुर में उपनयन संस्कार करने का निश्चय किया और लगभग उसी समय नानासाहेब चाँदोरकर ने भी अपने ज्येष्ठ पुत्र की ग्वालियर में शादी करने का कार्यक्रम बनाया। दीक्षित और चांदोरकर दोनों ही शिरड़ी आए और प्रेमपूर्वक उन्होंने बाबा को निमंत्रण दिया। तब उन्होंने अपने प्रतिनिधि शामा को ले जाने को कहा, परन्तु जब उन्होंने स्वयं पधारने के लिए उनसे आग्रह किया तो उन्होंने उत्तर दिया कि '' बनारस और प्रयाग निकल जाने के पश्चात्, मैं शामा से पहले ही पहुँच जाऊँगा ।'' पाठकगण! कृपया इन शब्दों को थोड़ा ध्यान में रखें, क्योंकि ये शब्द बाबा की सर्वज्ञता के बोधक हैँ।

बाबा की आज्ञा प्राप्त कर शामा ने इन उत्सवों में सम्मिलित होने के लिए प्रथम नागपुर, ग्वालियर और इसके पश्चात् काशी, प्रयाग और गया जाने का निश्चय किया। अप्पा कोते भी शामा के साथ जाने को तैयार हो गए।

प्रथम तो वे दोनों उपनयन संस्कार में सम्मिलित होने नागपुर पहुँचे। वहाँ काकासोब दीक्षित ने शामा को दो सौ रुपये खर्च के निमित्त दिये। वहाँ से वे लोग विवाह में सम्मिलित होने ग्वालियर गये। वहाँ नानासाहेब चांदोरकर ने सौ रुपये और उनके संबंधी श्री. जठार ने भी सौ रुपये शामा को भेंट किये। फिर शामा काशी पहुँचे, जहाँ जठार ने लक्ष्मी-नारायण जी के भव्य मंदिर में उनका उत्तम स्वागत किया। अयोध्या में जठार के व्यवस्थापक ने भी शामा का अच्छा स्वागत किया। शामा और कोते अयोध्या में २१ दिन तथा काशी (बनारस) में दो मास ठहर कर फिर गया को रवाना हो गए। गया में प्लेग फैलने का समाचार रेलगाड़ी में सुनकर इन लोगों को थोड़ी चिन्ता सी होने लगी। फिर भी रात्रि को वे गया स्टेशन पर उतरे और एक धर्मशाला में जाकर ठहरे। प्रातःकाल गयावाला पुजारी (पंडा), जो यात्रियों के ठहरने और भोजन की व्यवस्था किया करता था, आया और कहने लगा कि सब यात्री तो प्रस्थान कर चुके हैं, इसलिए अब आप भी शीघ्रता करें। शामा ने सहज ही उससे पूछा कि क्या गया में प्लेग फैला है? तब पुजारी ने कहा कि '' नहीं। आप निर्विघ्न मेरे यहाँ पधारकर वस्तुस्थिति का स्वयं अवलोकन कर लें।'' तब वे उसके साथ उसके मकान पर पहुँचे। उसका मकान क्या; एक विशाल महल था, जिसमें पर्याप्त यात्री विश्राम पा सकते थे। शामा को भी उसी स्थान पर ठहराया गया, जो उन्हें अत्यन्त प्रिय लगा। बाबा का एक बड़ा चित्र, जो कि मकान के अग्निम भाग के ठीक मध्य में लगा था, देखकर वे अति प्रसन्न हो गये। उनका हृदय भर आया और उन्हें बाबा के शब्दों की स्मृति हो आई कि ''मैं काशी और प्रयाग निकल जाने के पश्चात् शामा से आगे ही पहुँच जाऊँगा।'' शामा की आँखों से अश्रुओं की धारा बहने लगी और उनके शरीर में रोमांच हो आया तथा कंठ रुँध गया और रोते-रोते उनकी घिग्घियाँ बँध गईं। पुजारी ने शामा की जो ऐसी स्थिति देखी तो उसने सोचा कि यह व्यक्ति प्लेग की सूचना पर भयभीत होकर रुदन कर रहा है, परन्तु शामा ने उसकी कल्पना के विपरीत ही प्रश्न किया की यह बाबा का चित्र तुम्हें कहाँ से मिला? उसने उत्तर दिया कि मेरे दो-तीन सौ दलाल मनमाड़ और पुणताम्बे क्षेत्र में कार्य करते हैं तथा उस क्षेत्र से गया आने वाले यात्रियों की सुविधा का विशेष ध्यान रखा करते हैं। वहाँ शिरड़ी के साई महाराज की कीर्त्ति मुझे सुनाई पड़ी। लगभग बारह वर्ष हुए, मैंने स्वयं शिरड़ी जाकर बाबा के श्रीदर्शन का लाभ उठाया था और वहीं शामा के घर में लगे हुए उनके चित्र से मैं आकर्षित हुआ था। तभी बाबा की आज्ञा से शामा ने जो चित्र मुझे भेंट किया था, यह वही चित्र है। शामा की पूर्व स्मृति जागृत हो आई और जब गया वाले पुजारी को यह ज्ञात हुआ कि ये वही शामा हैं, जिन्होंने मुझे इस चित्र द्वारा अनुगृहीत किया था और आज मेरे यहाँ अतिथि बनकर ठहरे हैं तो उसके आनंद की सीमा न रही। दोनों बड़े प्रेमपूर्वक मिलकर हर्षित हुए। फिर पुजारी ने शामा का बादशाही ढंग से भव्य स्वागत किया। वह एक धनाढ्य व्यक्ति था। स्वयं डोली में और शामा को हाथी पर बिठाकर खूब घुमाया तथा हर प्रकार से उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखा। इस कथा ने सिद्ध कर दिया कि बाबा के वचन सत्य निकले। उनका अपने भक्तों पर कितना स्नेह था, इसको तो छोड़ो। वे तो सब प्राणियों पर एक-सा प्रेम किया करते थे और उन्हें अपना ही स्वरुप समझते थे। यह निम्नलिखित कथा से भी विदित हो जाएगा।

दो बकरे

एक बार जब बाबा लेंडी बाग से लौट रहे थे तो उन्होंने बकरों का एक झुंड आते देखा। उनमें से दो बकरों ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर लिया। बाबा ने जाकर प्रेम-से उनका शरीर अपने हाथ से थपथपाया और उन्हें ३२ रुपये में खरीद लिया। बाबा का यह विचित्र व्यवहार देखकर भक्तों को आश्चर्य हुआ और उन्होंने सोचा कि बाबा तो इस सौदे में ठगा गए हैं, क्योंकि एक बकरे का मूल्य उस समय तीन-चार रुपये से अधिक न था और वे दो बकरे अधिक से अधिक आठ रुपये में प्राप्त हो सकते थे।

उन्होंने बाबा को कोसना प्रारंभ किया, परंतु बाबा शान्त बैठे रहे। जब शामा और तात्या ने बकरे मोल लेने का कारण पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि '' मेरे कोई घर या स्त्री तो है नहीं, जिसके लिए मुझे पैसे इकठ्ठे करके रखना है।'' फिर उन्होंने चार सेर दाल बाजार से मँगाकर उन्हें खिलाई। जब उन्हें खिला-पिला चुके तो उन्होंने पुनः उनके मालिक को बकरे लौटा दिए। तत्पश्चात् ही उन्होंने उन बकरों के पूर्वजन्मों की कथा इस प्रकार सुनाई- '' शामा और तात्या, तुम सोचते हो कि मैं इस सौदे में ठगा गया हूँ? परन्तु ऐसा नहीं, इनकी कथा सुनो। गत जन्म में ये दोनों मनुष्य थे और सौभाग्य से मेरे निकट संपर्क में थे। मेरे पास बैठते थे। ये दोनों सगे भाई थे और पहले इनमें परस्पर बहुत प्रेम था, परन्तु बाद में ये एक दूसरे के कट्टर शत्रु बन गए। बड़ा भाई आलसी था, किन्तु छोटा भाई बहुत परिश्रमी था, जिसने पर्याप्त धन उपार्जन कर लिया था, जिससे बड़ा भाई अपने छोटे भाई से ईर्ष्या किया करता था। इसलिए उसने छोटे भाई की हत्या करके उसका धन हड़पने की ठानी और अपना आत्मीय सम्बन्ध भूलकर वे एक दूसरे से बुरी तरह झगड़ने लगे। बड़े भाई ने अनेक प्रयत्न किए, परन्तु वह छोटे भाई की हत्या में असफल रहा। तब वे एक दूसरे के प्राणघातक शत्रु बन गए। एक दिन बड़े भाई ने छोटे भाई के सिर पर लाठी से

प्रहार किया। तब बदले में छोटे भाई ने भी बड़े भाई के सिर पर कुल्हाड़ी चलाई और परिणामस्वरुप वहीं दोनों की मृत्यु हो गई। फिर अपने कर्मों के अनुसार ये दोनों बकरे की योनि को प्राप्त हुए। जैसे ही वे मेरे समीप से निकले तो मुझे उनके पूर्व इतिहास का स्मरण हो आया और मुझे दया आ गई। इसलिए मैंने उन्हें कुछ खिलाने-पिलाने तथा सुख देने का विचार किया। यही कारण है कि मैं ने उनके लिए पैसे खर्च किए, जो तुम्हें महँगे प्रतीत हुए हैं। तुम लोगों को यह लेन-देन अच्छा नहीं लगा, इसलिए मैंने इनके बकरों को गड़ेरिऐ को वापस कर दिया है। सचमुच बकरे जैसे सामान्य प्राणियों के लिये भी बाबा को बेहद प्रेम था।

।। श्री सद्‌गुरु साईनाथार्पणमस्तु। शुभं भवतु ।।